अपठित गद्यांश

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

अनुशासन ही वह कुंजी है। जिससे हम जीवन का विकास कर पाते हैं तथा सफलता के अनेक चरण छूते हैं । यदि हम देखें तो समूची प्रकृति भी एक अनुशासन में बंधी हुई है। सूर्य का नित्य प्रति एक ही दिशा में उगना तथा उसी तरह अस्त होना अनुशासन के ही प्रमाण हैं। चंद्रमा, तारे, बादल, सबका अपना अनुशासन है। जब किसी का अनुशासन भंग होता है तब कुछ अप्रतीक्षित तथा विध्वंसकारी घटनाएँ घटित होती हैं । समद्र में ज्वार-भाटा आने पर भी समुद्र मर्यादित रहता है। एक निश्चित गति से पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना या अनेक उपग्रहों की अपनी गति से गतिमान रहना उनके अनुशासन का ही परिचायक है। ठीक इसी प्रकार विद्यार्थी के जीवन में भी अनुशासन का अत्यधिक महत्त्व है। विद्यार्थी-जीवन व्यक्ति के सघन साधना का काल है जिसमें वह स्वयं का शारीरिक, मानसिक तथा रचनात्मक निर्माण करता है।

अनशासन दो प्रकार का होता है–पहला-आत्मानुशासन, दूसरा-बाह्मानुशासन। आत्मानुशासन की पेरणा विद्यार्थी के जीवन निर्माण की पहली सीढ़ी है। दूसरी ओर बाह्मानुशासन स्वयं के अलावा किसी दूसरे व्यक्ति के दबाव होने तथा उसके अधिकारों के कारण माना जाने वाला अनुशासन है। चूँकि विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने की अवस्था में बालक का निर्माण सीखने की प्रक्रिया में होता है। इसलिए इस अवस्था में जो सीखता है, वे उसके जीवन के स्थाई मूल्य बन जाते हैं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है--

(अ) अनुशासन

(ब) अनुशासन के प्रकार

(स) अनुशासन का महत्त्व

(द) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व (स)

2. अनुशासन कितने प्रकार का होता है?

(अ) चार

(ब) दो

(स) तीन

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (ब)

3. व्यक्ति के जीवन का सघन साधना का काल है--

(अ) बाल्यकाल

(ब) वानप्रस्थ काल

(स) विद्यार्थी जीवन

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

4. अनुशासन के प्रमाण हैं--

(अ) सूर्य का नित्य प्रति एक ही दिशा में उगना

(ब) समुद्र में ज्वार भाटा आने पर भी मर्यादित रहना

(स) पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना

(द) उपर्युक्त सभी (द)

5. व्यक्ति के जीवन में किसका गहरा महत्त्व है?

(अ) प्राकृतिक घटनाओं का

(ब) दूसरों के अधिकारों के कारण माने जाने वाले अनुशासन का

(स) सीखने की प्रक्रिया का

(द) अनुशासन का (द)

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए---

वह स्वाधीन किसान रहा
अभिमान भरा आँखों में इसका
छोड़ उसे मंझधार आज
संसार कगार सदृश वह खिसका
लहराते वे खेत दृगों में
हुआ बेदखल वह अब जिनसे
हँसती थी उसके जीवन की
हरियाली जिनके तृन-तृन से
आँखों ही में घूमा करता
वह उसकी आँखों का तारा,
कारकुनों की लाठी से जो
गया जवानी ही में मारा!
बिना दवा-दर्पन के घरनी
स्वरग चली, आँखें आती भर,
देख-देख के बिना दुधमुंही
बिटिया दो दिन बाद गई मर
उजरी उसके सिवा किसे कब
पास दुहाने आने देती?

अह, आँखों में नाचा करती
उजड़ गई जो सुख की खेती
पिछले सुख की स्मृति आँखों में
क्षणभर एक चमक है लाती
तुरंत शून्य में गड़ वह चितवन
तीखी नोक सदृश बन जाती।

6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है

(अ) वे आँखें

(ब) खेती

(स) किसान

(द) शोषण (अ)

7. इस काव्यांश में किसकी पीड़ा का वर्णन है?

(अ) मजदूर

(ब) व्यापारी

(स) किसान

(द) उपर्युक्त सभी का (स)

8. 'कारकुन' का शाब्दिक अर्थ है--

(अ) शोषक

(ब) जमींदार का कार्मिक

(स) शोषित

(द) राजा (ब)

9. 'आँखों का तारा होना' का तात्पर्य है

(अ) अत्यधिक प्रिय होना

(ब) अत्यधिक बुरा लगना

(स) आँखों की चमक

(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (अ)

10. काव्यांश में वर्णित पीड़ित वर्ग की आँखों में चमक कब आती है?

(अ) शोषण से पूर्व की सम्पन्नता को याद करने पर

(ब) अपनी प्रशंसा सुनकर

(स) व्यापारी द्वारा बुलाने पर

(द) भविष्य में सम्पन्न होने की कल्पना करने पर (अ)

11. 'माता का अंचल' कृति के रचनाकार हैं

(अ) शिवपूजन सहाय

(ब) मधु कांकरिया

(स) कमलेश्वर

(द) शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्र'

उत्तर-(अ) शिवपूजन सहाय

12. 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी का उद्देश्य है

(अ) औपनिवेशक दौर की मानसिकता को चोट करना

(ब) विदेशी आक्रमण की भर्त्सना करना

(स) व्यावसायिक पत्रकारिता का पर्दाफाश करना

(द) उपर्युक्त सभी

उत्तर- (द) उपर्युक्त सभी

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए 5x1=5

जीवन की सच्ची प्रगति स्वावलम्बन के द्वारा ही संभव है। यदि हमारे मन में अपना कार्य करने का उत्साह नहीं है, अपने ऊपर विश्वास नहीं है, आलस्य ने हमारी कार्य शक्ति को पंगु बना दिया है तो फिर कैसे हमारे जीवन के कार्य परे हो सकेंगे? ऐसी स्थिति में हम अपने आपको किसी भी कार्य कोरने में असमर्थ पाएंगे। समाज, राष्ट्र और संसार के लिए तो हम कर ही क्या सकेंगे, स्वयं अपने लिए भी भार स्वरूप हो जाएंगे। यह बात विचारणीय है कि संसार में जो इतने महान कार्य हुए हैं, क्या उनके पीछे स्वावलम्बन की सुदृढ़ शक्ति नहीं थी? यदि परावलम्बी पुरुषों की भांति सभी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते, अकर्मण्यता, आलस्य और दूसरों के सहारे जीने की भावना लिए रहते तो मानव समाज की इतनी प्रगति क्या संभव थी? इसीलिए तो संसार के सभी महापुरुष स्वावलंबन के पुजारी थे। अपने हाथों से ही उन्होंने अपने महान जीवन का द्वार खोला था। अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर आदि महापुरुषों से कौन अपरिचित है? उन्होंने स्वावलम्बन के अमृत को पीकर ही अमरता प्राप्त की थी। इसी कारण वे आज मर कर भी जीवित हैं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है---

(अ) स्वावलम्बन

(ब) स्वावलम्बन का महत्त्व

(स) स्वावलम्बन और उत्साह

(द) उपर्युक्त सभी। (ब)

2. संसार के महान कार्यों के पीछे शक्ति निहित होती है--

(अ) परावलम्बन की

(ब) स्वावलम्बन की

(स) आलम्बन की

(द) इनमें से कोई नहीं (ब)

3. स्वावलम्बी महापुरुष थे—

(अ) अब्राहम लिंकन

(ब) महात्मा गाँधी

(स) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

(द) उपर्युक्त सभी (द)

4. परावलम्बी पुरुष की प्रवृत्ति है--

(अ) उत्साह

(ब) अकर्मण्यता

(स) विश्वास

(द) उपर्युक्त सभी (ब)

5. स्वावलम्बन के द्वारा ही संभव है--

(अ) विनाश

(ब) विकास

(स) पराजय

(द) पराभव (ब)

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए--

भई, सूरज
जरा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।

वक्त पर जगाओ,

नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह

तो जो आगे निकल गए हैं

उन्हें पाने घबरा कर भागेगा यह।

घबरा के भागना अलग है

क्षिप्र गति अलग है

क्षिप्र तो वह है जो सही क्षण में सजग है

सूरज, इसे जगाओ,

पवन, इसे हिलाओ।

6. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक है--

(अ) कामचोर को जगाना

(ब) सोये हुए को जगाना

(स) आलसी को जगाना

(द) उपर्युक्त सभी (अ)

7. हवा से किस आदमी को हिलाने को कहा है---

(अ) कल्पना में डूबे व्यक्ति को

(ब) एक स्थान पर टिके व्यक्ति को

(स) भागते व्यक्ति को

(द) सोते व्यक्ति को (अ)

8. बेवक्त जागने पर क्या होगा?

(अ) दिन डूब जाएगा

(ब) समय बीत जाएगा

(स) साथ वाले आगे निकल जायेंगे

(द) कुछ नहीं होगा (स)

(9) सच से बेखबर कोन है?

(अ) जो अशिक्षित है।

(ब) जो कल्पनाओं में खोया है।

(स) जो सोया पड़ा है।

(द) जो भाग रहा है। (ब)

10. 'क्षिप्र गति' से आशय है--

(अ) तेज चाल

(ब) मद्धिम चाल

(स) सुस्त चाल

(द) दौड़ना (अ)

11. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का असली नाम था--

(अ) तारकेश्वर नाथ

(ब) धनपत राय

(स) नीरज सहाय

(द) कमलनाथ (अ)

12. 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी में मूर्तिकार ने बंगाल में किन-किन देशभक्त नेताओं की मूर्ति देखी?

(अ) गुरुदेव रवीन्द्र नाथ

(ब) सुभाषचन्द्र बोस

(स) राजा राम मोहन राय

(द) उपर्युक्त सभी (द)

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-- 5x1=5

सामान्यतः ईश्वर के दो रूप माने गए हैं–सगुण एवं निर्गुण। जब परमात्मा को निराकार, अज, अनादि, सर्वव्यापी, गुणातीत, अगोचर, सूक्ष्म मानकर उसकी विवेचना की जाती है तब उसे निर्गुण ब्रह्म कहा जाता है और जब वही ब्रह्म सगुण, साकार रूप धारण कर नर शरीर ग्रहण कर नाना प्रकार के कृत्य करता है तब उसे सगुण परमात्मा के रूप में जाना जाता है। सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से सगुण भक्ति को निर्गुण भक्ति की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है, किन्तु केवल इसी कारण से निर्गुण भक्ति की उपेक्षा नहीं की जा सकती। तत्कालीन परिस्थितियों में सगुणोपासक भक्त कवियों का सारा ध्यान इस ओर केन्द्रित था कि हिन्दू समाज को विघटन और उत्पीड़न से बचाया जा सके। इसलिए उन्होंने हिन्दू समाज के विभिन्न घटकों को संगठित करने का कार्य किया। दूसरी ओर निर्गुणोपासक कवियों की दृष्टि हिन्दू समाज को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने की ओर लगी हुई थी। वे हिन्दू और मुसलमान का भेद भुलाकर मानवता के उदात्त मूल्यों की स्थापना में लगे हए थे।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है---

(अ) साकार एवं निराकार भक्ति

(ब) सगुण एवं निर्गुण भक्ति धारा

(स) सामाजिक एकता और भक्ति

(द) परमात्मा की सर्वव्यापकता (ब)

2. निर्गुण ब्रह्म कहा जाता है---

(अ) गणातीत को

(ब) अगोचर को

(स) अनादि को

(द) उपर्यक्त सभी (द)

3. जब ब्रह्म आकार धारण कर नाना प्रकार के कृत्य करता है, कहलाता है---

(अ) सगुण ब्रह्म

(ब) निर्गुण ब्रह्म

(स) सगुण और निर्गुण ब्रह्म

(द) इनमें से कोई नहीं (अ)

4. निर्गुणोपासक भक्त कवियों का ध्यान केन्द्रित था–

(अ) हिन्दू समाज को विघटन और उत्पीड़न से बचाने में

(ब) हिन्दू समाज के विभिन्न समूहों को इकट्ठा करने में

(स) हिन्दू मुसलमान का भेद भुलाकर एक करने में

(द) इनमें से सभी कृत्य करने में (स)

5. सगुण भक्ति को निर्गुण भक्ति की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण माना जाता है--

(अ) आर्थिक दृष्टि से

(ब) ऐतिहासिक दृष्टि से

(स) धार्मिक दृष्टि से

(द) सामाजिक दृष्टि से (द)

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए----

रणभेरी सुन, कह 'विदा'-'विदा'

जब सैनिक पुलक रहे होंगे।

हाथों में कुमकुम थाल लिए,

कुछ जल कण ढुलक रहे होंगे।

कर्तव्य-प्रेम की उलझन में,

पथ भूल न जाना पथिक कहीं॥

वेदी पर बैठा महाकाल,
जब नर बलि चढ़ा रहा होगा।
बलिदानी अपने ही कर से,
निज मस्तक बढ़ा रहा होगा।
उस बलिदान-प्रतिष्ठा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं॥

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में।

माँ! माँग रही होगी आहुति,
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।
पल भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं॥

6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है---

(अ) पथ भूल न जाना पथिक कहीं

(ब) स्वतन्त्रता की ज्वाला

(स) राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य

(द) रणभेरी का आह्वान (अ)

7. 'कुछ जल कण ढुलक रहे होंगे' में किसके लिए कहा गया है

(अ) माँ

(ब) बहन

(स) पत्नी

(द) उपर्युक्त सभी (द)

8. 'पथ भूल न जाना पथिक कहीं' में पथिक कौन है?

(अ) सैनिक

(ब) यात्री

(स) अतिथि

(द) उपर्युक्त सभी (अ)

9. 'पल भर भी पड़ असमंजस में' में 'असमंजस' का अर्थ है–

(अ) उलझन

(ब) दुविधा

(स) कशमकश

(द) उपर्युक्त सभी (द)

10. कौनसा कथन असत्य है--

(अ) सैनिक मातृभूमि की रक्षा हेतु जा रहा है।

(ब) सैनिक बलिदान हेतु स्वयं तत्पर है।

(स) सैनिक निज स्वार्थ के लिए असमंजस में है।

(द) सैनिक स्वतंत्रता की ज्वाला में कूदने जा रहा है। (स)

11. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ के रचनाकार हैं---

(अ) शिव पूजन सहाय

(स) प्रेमचन्द उत्तर

(ब) कमलेश्वर

(द) अज्ञेय (ब)

12. साना-साना हाथ जोडि.....पाठ की विधा है---

(अ) निबंध

(ब) कहानी

(स) यात्रा-वृतान्त

(द) उपन्यास (स)

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए 5x1=5

भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ अपने समय पर आती हैं और पर्याप्त काल तक ठहरती हैं। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल-फूलों का सृजन करती हैं। धूप और वर्षा के समान अधिकार के कारण यह भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही हैं। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषी जंगल में रहना पसन्द करते थे। प्रकति-प्रेम केही कारण यहाँ के लोग पत्तों में खाना पसन्द करते हैं। वश्लों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं। सूर्य और चन्द्र दर्शन नित्य और नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता हैं।

पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनन्द को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए हमारे यहाँ शोकान्त नाटकों का निषेध है। अतिथि को भी देवता माना गया है–'अतिथि देवो भव'।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है---

(अ) भारतवर्ष और प्रकृति

(ब) भारत की नदियाँ

(स) भारतीय मनीषि

(द) शुक्र-बुध **(स)**

2. 'अतिथि देवो भव' मूलतः किस देश की संस्कृति मानी जाती है?

(अ) श्रीलंका

(ब) मॉरीशस

(स) भूटान

(द) भारत **(द)**

3. भारतीय संस्कृति में नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है---

(अ) शनि-राहु

(ब) सूर्य-चन्द्र

(स) मंगल-बहस्पति

(द) शुक्र-बुध **(ब)**

4. भारत में मोक्षदायिनी स्वरूप माना गया है।

(अ) पर्वतों का

(ब) नदियों का

(स) मैदानों का

(द) पेड़-पौधों का **(ब)**

5. सदैव कवियों का प्रेरणास्रोत माना जाता है–

(अ) गंगा नदी

(ब) हिमालय पर्वत

(स) सर्य-चन्द्र

(द) तारा-नक्षत्र **(अ)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए---

पंचवटी की छाया में है, सुन्दर पर्ण-कुटीर बना।
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर, धीर, वीर, निर्भीक मना॥
जाग रहा वह कौन धनुर्धर, जबकि भुवन भर सोता है?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।

किस व्रत में है व्रती वीर यह, निद्रा का यों त्याग किए।
राजभोग के योग्य विपिन में, बैठा आज विराग लिए।
बना हुआ है प्रहरी जिसका, उस कुटीर में क्या धन है।
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है।
मर्त्यलोक मालिन्य मेटने, स्वामि संग जो आई है।
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह, कटी आज अपनाई है।
वीर वंश की लाज यही है, फिर क्यों वीर न हो प्रहरी।
विजन देश है निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी॥

6. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक है---

(अ) पंचवटी का प्रहरी

(ब) पंचवटी की छाया

(स) व्रती वीर

(द) निशाचरी माया **(ब)**

7. 'जबकि भुवन भर सोता है' में 'भुवन' का अर्थ है

(अ) संसार

(ब) जगत

(स) विश्व

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

8. 'तीन लोक की लक्ष्मी यह', लक्ष्मी किसे कहा गया है?

(अ) सीता

(ब) सावित्री

(स) यशोधरा

(द) उर्मिला **(अ)**

9. 'विजन देश है निशा शेष है' में 'विजन' से आशय है

(अ) दृष्टिकोण

(ब) जनहीन

(स) अकेला

(द) दृष्टिहीन **(ब)**

10. 'पंचवटी' में किसने कुटिया बनाई थी

(अ) वाल्मीकि ने

(ब) राम-लक्ष्मण ने

(स) विश्वामित्र ने

(द) पाण्डवों ने **(ब)**

11. 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी में व्यंग्य किया गया है--

(अ) रानी एलिजाबेथ पर

(ब) सरकारी तन्त्र पर

(स) रानी के दर्जी पर

(द) भारतीयों की मेहमान नवाजी पर **(ब)**

12. लेखिका मधु कांकरिया ने गंगटोक को किसका शहर कहा है

(अ) मेहनतकश बादशाहों का

(ब) परिश्रमी लोगों का

(स) वैज्ञानिकों की देन का

(द) प्राचीन परम्पराओं का **(अ)**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–5 x 1 =5

मनुष्य नाशवान प्राणी है। वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है। अन्य लोगों की भाँति महापुरुष भी नाशवान हैं। वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं। उनके ये कार्य चिरस्थायी होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं। ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं, वे स्थायी होते हैं और बदली परिस्थितियों में नए वातावरण के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है, उनमें गाँधीजी को यदि आज भी नहीं माना जाता तो भी भविष्य में उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा, बल्कि जीवनधारा को सदा एक और अविभाज्य माना। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं, वे वास्तव में उसी धारा की उपधाराएँ हैं। गाँधीजी ने मानव-जीवन के इन नव-कथानक की व्याख्या न किसी हृदय को स्पर्श करने वाले वीरकाव्य की भाँति की और न ही किसी दार्शनिक महाकाव्य की भाँति ही। उन्होंने मनुष्यों की आत्मा में अपने को निम्नतम रूप में उचित कार्य के प्रति निष्ठा, किसी ध्येय की पूर्ति के लिए सेवा और किसी विचार के प्रति स्वार्पण के बीच सतत चलने वाले संघर्ष के नाटक की भाँति माना है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है

(अ) नाशवान प्राणी–मनुष्य

(ब) महात्मा गाँधी एक महान जीवन दृष्टा

(स) साध्य-साधन का संबंध

(द) महापुरुषों के आदर्श। **(ब)**

2. जिन कार्यों के पीछे आदर्श होते हैं

(अ) स्थायी होते हैं।

(स) नाशवान होते हैं।

(ब) क्षणभंगुर होते हैं।

(द) अल्पकालिक होते हैं। **(अ)**

3. भविष्य में सबसे बड़े महापुरुष के रूप में याद किया जाएगा---

(अ) गाँधीजी

(ब) नेहरूजी

(स) विवेकानन्दजी

(द) दयानन्द सरस्वती **(अ)**

4. उचित कार्य के प्रति निष्ठा का संदेश किसने दिया?

(अ) अब्राहम लिंकन

(ब) विवेकानन्द

(स) गाँधीजी

(द) वल्लभ भाई पटेल **(स)**

5. कौनसा कथन सत्य नहीं है?

(अ) उचित कार्य के प्रति निष्ठा आवश्यक है।

(ब) ध्येय की पर्ति के लिए सेवाभाव जरूरा है।

(स) महापुरुष अपने कार्यों के द्वारा याद नहीं किये जाते हैं।

(द) अच्छे कार्य के प्रति सब कुछ न्यौछावर करना चाहिए। **(स)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए 5x1=5

यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।

चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी-स्वर को।

सब ने रानी की ओर अचानक देखा,

वैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा।
बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,
वह सिंही अब थी हहा! गौमुखी गंगा।
हाँ जनकर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सन लें तुमने स्वयं अभी यह माना।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।
दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है,
पर अबला जन के लिए कौन-सा पथ है?

6. उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक है---

(अ) कैकेयी का अनुताप

(ब) भरत की माता

(स) कैकेयी के अटल वचन

(द) अबला जन **(अ)**

7. 'गौमुखी गंगा' कहकर इसे इंगित किया गया है

(अ) कौशल्या

(ब) कैकेयी

(स) सीता

(द) सुमित्रा **(ब)**

8. 'विधु-लेखा' में 'विधु' से आशय है

(अ) चाँद

(ब) सूरज

(स) पृथ्वी

(द) तारे **(अ)**

9. दुर्बलता का विशेष चिन्ह किसे बताया गया है?

(अ) कसम

(ब) सौगन्ध

(स) शपथ

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

10. 'बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा' में 'असंख्य तरंगा' की प्रतीकात्मक अर्थ है

(अ) हजारों लहरें

(ब) हजारों लोग

(स) हजारों तरंगें

(द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**

11. 'साना-साना हाथ जोडि.....' पाठ की लेखिका है---

(अ) महादेवी वर्मा

(ब) मधु कांकरिया

(स) उषा प्रियंवदा

(द) कृष्णा सोबती **(ब)**

12. रानी एलिजाबेथ द्‌वितीय रानी थी--

(अ) हिन्दस्तान की

(ब) पाकिस्तान की

(स) इंग्लैण्ड का

(द) नेपाल की **(स)**

निम्नलिखित अपठित गद्‌यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए--- 5x1=5

देश-प्रेम क्या है? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन-पर्वत सहित सारी भमि। यह प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्यगत प्रेम है, जिनके मध्य हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते हैं, जिनका और हमारा हर घडी का साथ रहता है, जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास हो जाता है, उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अन्तःकरण का कोई भाव है तो यही हो सकता है।

1. उपर्युक्त गद्‌यांश का शीर्षक है----

(अ) देश-प्रेम

(ब) देश-भक्ति

(स) सारा देश

(द) उपर्युक्त सभी **(अ)**

2. देश-प्रेम किस कोटि का माना जाता है?

(अ) साहचर्यगत

(ब) असाहचर्यगत

(स) अ और ब दोनों

(द) इनमें कोई नहीं **(अ)**

3. सान्निध्य से उत्पन्न होता है

(अ) क्रोध-उपेक्षा

(ब) लोभ-राग

(स) नफरत-हिंसा

(द) आकर्षण-अपेक्षा **(ब)**

4. देश प्रेम वास्तव में भाव माना जाता है

(अ) अन्त:करण का

(ब) बाह्यकरण का

(स) अ और ब दोनों का

(द) इनमें कोई नहीं **(अ)**

5. साहचर्यगत प्रेम की क्रियाएँ हैं

(अ) साथ रहना

(ब) आँखों से देखना

(स) बराबर सुनना

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए--- 5x1=5

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल पल परिवर्तित प्रकृति-वेश!
मेखला कार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र-दृग-सुमन फार
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार
जिसके चरणों में पड़ा ताल
'दर्पण-सा फैला है विशाल!
गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों से सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!

6. उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक है–

(अ) पावस ऋतु

(ब) पर्वत प्रदेश में पावस

(स) प्रकृति वेश

(द) झरते निर्झर **(ब)**

7 मेखलाकार पर्वत अपार' में किस पर्वतमाला का वर्णन हआ है?

(अ) मलयगिरि

(ब) हिमालय

(स) नीलगिरी

(द) चित्रकूट **(ब)**

8. 'अपने सहस्र-दृग-सुमन फार' में 'सहन' का अर्थ है

(अ) सौ

(ब) हजार

(स) दस हजार

(द) हजारों (अगणित) **(ब)**

9. हिमालय से कौनसी पवित्र नदी का उद्‌गम होता है?

(अ) यमुना

(ब) गंगा

(स) गोदावरी

(द) नर्मदा **(ब)**

10. 'झरते हैं झाग भरे निर्झर' में 'निर्झर' से आशय है---

(अ) झरना

(ब) झर-झर

(स) बिना झरे उत्तर

(द) निर्जल **(अ)**

11. जॉर्ज पंचम की किस स्थान पर स्थित लाट की नाक गायब हुई थी?

(अ) इण्डिया गेट

(ब) चाँदनी चौक

(स) हवामहल

(द) ताज महल **(अ)**

12. साना-साना हाथ जोड़ि. ..... में लेखिका ने गैंगटॉक को शहर कहा है---

(अ) मेहनतकश बादशाहों का

(ब) मजदूरों का

(स) किसानों का

(द) आलसियों का **(अ)**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए 5x1=5

जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है। जियो तो प्राण ढाल दो जिंदगी में, ढाल दा जीवन-रस के उपकरणों में। ठीक है! लेकिन क्यों? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है। याज्ञवल्क्य बहत बडे ब्रह्मवादी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती–सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं– आत्मनस्तु कामाय सवप्रिय भवति। विचित्र नहीं है यह तर्क? संसार में जहाँ कहीं प्रेम है सब मतलब के लिए। सुना है, पश्चिम के हॉब्स और हेल्वेशियस जैसे विचारकों ने भी ऐसी ही बात कही है। सुन के हैरानी होती है। दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है केवल प्रचण्ड स्वार्थ । भीतर की जिजीविषा–जीते रहने की प्रचण्ड इच्छा ही अगर बड़ी बात हो, तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ, जिनके बल पर दल बनाये जाते हैं, शत्रु-मर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ है। इसके द्वारा कोई न कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अन्तरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है। स्वार्थ से भी बड़ी कोई-न कोई बात अवश्य है, जिजीविषा से भी प्रचण्ड कोई-न-कोई शक्ति अवश्य है। क्या है?

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है---

(अ) जीना एक कला

(ब) जीना एक तपस्या

(स) जीने की भावना

(द) प्रचण्ड स्वार्थ **(ब)**

2. 'आत्मनस्तु कामायं सर्वप्रिय भवति' से तात्पर्य है

(अ) सब, सबके लिए प्रिय होते हैं

(ब) सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं

(स) सब अपने मतलब के लिए प्रिय नहीं होते हैं

(द) सब दूसरों के लिए प्रिय होते हैं **(ब)**

3. दुनिया में प्रस्तुत है--

(अ) त्याग

(ब) प्रेम

(स) प्राण्ड स्वार्थ

(द) परमार्थ **(स)**

4. पश्चिम के विचारकों ने कहा है कि दुनिया में

(अ) त्याग नहीं है

(ब) परमार्थ नहीं है

(स) प्रचण्ड स्वार्थ है

(द) परार्थ नहीं है **(स)**

5. प्रचण्ड स्वार्थ में किया जाता है

(अ) शत्रु-मर्दन का अभिनय

(ब) देशोद्धार का नारा

(स) साहित्य, कला की महिमा

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-- 5x1=5

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊ
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना बनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

6. उपर्युक्त अपठित काव्यांश का उचित शीर्षक है--

(अ) पुष्प की अभिलाषा

(ब) चाह नहीं

(स) मातृभूमि

(द) वीर की अभिलाषा **(अ)**

7. कवि किसकी इच्छा का वर्णन कर रहे हैं

(अ) पेड़

(ब) तितली

(स) पुष्प

(द) वनमाली **(स)**

8. इन पंक्तियों में पुष्प की कौनसी भावना व्यक्त होती है?

(अ) सौन्दर्य प्रेम

(ब) राष्ट्र प्रेम

(स) ईश्वर प्रेम

(द) शृंगार प्रेम **(द)**

9. 'चाह नहीं देवों के सिर पर इठलाऊँ' में 'चाह' का अर्थ है---

(अ) इच्छा

(ब) अभिलाषा

(स) कामना

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

10. कौनसा कथन सत्य है---

(अ) पुष्प श्रृंगार में सजना चाहता है।

(ब) पुष्प देवों के सिर पर चढ़ कर इठलाना चाहता है।

(स) पुष्प सम्राटों की शव-यात्रा में बिखरना चाहता है।

(द) वीरों के पद-मार्ग में देश की खातिर बिखरना चाहता है। **(द)**

11. जॉर्ज पंचम की खोई हुई नाक का नाप लिखा था?

(अ) सभापति ने

(ब) मूर्तिकार ने

(स) रानी ने

(द) दर्जी ने **(ब)**

12. साना-साना हाथ जोडि.....पाठ में किस शहर के सौन्दर्य का वर्णन है?

(अ) अगरतला का

(ब) गुवाहाटी का

(स) महाबलेश्वर का

(द) गंगटोक का **(द)**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए--- 5x1=5

उपासना की दृष्टि से कई लोग काफी बढे-चढे होते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि जहाँ दूसरे लोग भगवान को बिल्कुल ही भूल बैठे हैं, वहाँ वह व्यक्ति ईश्वर का स्मरण तो करता है, औरों से तो अच्छा है। इसी प्रकार जो बुराइयों से बचा है, अनीति और अव्यवस्था नहीं फैलाता. संयम और मर्यादा में रहता है, वह भी भला है। उसे बुद्धिमान कहा जाएगा, क्योंकि दर्बद्धि को अपनाने से जो अगणित विपत्तियाँ उस पर टूटने वाली थीं, उनसे बच गया। स्वयं भी उद्विग्न नहीं हआ और दसरों को भी विक्षुब्ध न करने का भलमनसाहत बरतता रहा। यह दोनों ही बातें अच्छी हैं। ईश्वर का नाम लेना और भलमनसाहत से रहना, एक अच्छे मनुष्य के लिये भाग्य कार्य है। उतना तो हर समझदार आदमी को करना ही चाहिये था। जो उतना ही करता है, उसकी उतनी तो प्रशंसा की ही जाएगी कि उसने अनिवार्य कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं की और दष्ट-दुरात्माओं की होने वाली दुर्गति से अपने को बचा लिया।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है–

(अ) बुद्धिमान और दुर्बुद्धि

(ब) अनीति और अव्यवस्था

(स) समझदार आदमी

(द) कर्त्तव्यों की उपेक्षा **(अ)**

2. एक समझदार आदमी को क्या नहीं करना चाहिए–

(अ) अनीति और अव्यवस्था फैलाना

(ब) ईश्वर का नाम लेना

(स) भलमनसाहत से रहना

(द) संयम और मर्यादा में रहना **(अ)**

3. ईश्वर का नाम लेना और भलमनसाहत से रहना, योग्य कार्य है--

(अ) बुरे मनुष्य के लिए

(ब) अच्छे मनुष्य के लिए

(स) अच्छे-बुरे मनुष्य के लिए

(द) क, ख, ग तीनों के लिए **(ब)**

4. बुराइयों से बचने वाला कहलाता है

(अ) बुद्धिमान

(ब) समझदार

(स) औरों से अच्छा

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

5. किस मनुष्य की प्रशंसा नहीं की जानी चाहिए?

(अ) जिसने कर्त्तव्यों की उपेक्षा की

(ब) जो उपासना करता है

(स) जो ईश्वर-स्मरण करता है

(द) जो संयम से रहता है **(अ)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–5x1=5

विषम श्रृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलती
युग बंदिनी हवाएँ
प्रश्न-चिह्न बन खड़ी हो गईं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इंदु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना
ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी
यह विश्वास अमर है

जनगंगा में ज्वार
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है---

(अ) कठिन डगर

(ब) युग बंदिनी हवाएँ

(स) जनगंगा का ज्वार

(द) पहरुए सावधान रहना **(द)**

7. 'उठता है तूफान, इंदु तुम दीप्तिमान रहना' में 'इंदु' से आशय है--

(अ) सूरज

(ब) चाँद

(स) नक्षत्र

(द) तारे **(ब)**

8. 'आज प्रभंजन बनकर चलती' में कवि का 'प्रभंजन' से क्या अर्थ है--

(अ) भजन-कीर्तन

(ब) तूफान

(स) धीमी हवाएँ

(द) तेज हवाएँ **(द)**

9. कवि किस विश्वास की बात कर रहा है?

(अ) यही कि कठिन रास्ता है।

(ब) नई जिन्दगी आ रही है।

(स) छायाओं का डर है।

(द) कमजोर हमारा घर है। **(ब)**

10. कवि ने 'पहरुए' किसे सम्बोधित किया है?

(अ) नौजवानों को

(ब) युवकों को

(स) नयी पीढ़ी को

(द) उपर्युक्त सभी को **(द)**

11. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक को बचपन में लगाव था--

(अ) माता से

(ब) पिता से

(स) भाई से

(द) बहन से **(ब)**

12. 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में इमारतों का श्रृंगार किया गया था

(अ) हसीनाओं की तरह

(ब) नाजनीनों की तरह

(स) महिलाओं की तरह

(द) नौटंकी वालों की तरह **(ब)**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 5x1=5

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है, इससे अपनी श्रद्धा के बदले में हम श्रद्धेय से अपने लिए कोई बात नहीं चाहते। श्रद्धा धारण करते हुए हम अपने को उस समाज में समझते हैं जिसके अंश पर उसने कोई शुभ प्रभाव डाला हो। श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मों के प्रतिकार में होती है जिनका शुभ प्रभाव अकेले हम पर ही नहीं, बल्कि सारे मनुष्य समाज पर पड़ सकता है। श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रकट करते हैं। सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध या घृणा प्रकट करने के लिए समाज ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिनिधित्व प्रदान कर रखा है। यह काम उसने इतना भारी समझा है कि उसका भार सारे मनुष्यों को बाँट दिया है, दो-चार मानवीय लोगों के ही सिर पर नहीं छोड़ रखा है। जिस समाज में सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध प्रकट करने के लिए जितने ही अधिक लोग तत्पर पाये जायेंगे, उतना ही वह समाज जागृत समझा जायेगा। श्रद्धा की सामाजिक विशेषता एक इसी बात से समझ लीजिये कि जिस पर हम श्रद्धा रखते हैं उस पर चाहते हैं कि और लोग भी श्रद्धा रखें। पर जिस पर हमारा प्रेम होता है उससे और दस-पाँच आदमी प्रेम रखें। परन्तु हम प्रिय पर लोभवश एक प्रकार का अनन्य अधिकार या इजारा चाहते हैं। श्रद्धालु अपने भाव में संसार को भी सम्मिलित करना चाहता है, पर प्रेमी नहीं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है---

(अ) श्रद्धा का महत्त्व

(ब) श्रद्धा एक सामाजिक भाव

(स) श्रद्धा और क्रोध

(द) श्रद्धा और श्रद्धालु **(अ)**

2. श्रद्धालु अपने भाव में किसको शामिल करना चाहता है?

(अ) स्वयं को

(ब) दूसरों को

(स) परिजनों को

(द) संसार को **(द)**

3. प्रिय पर लोभवश अनन्य अधिकार चाहते हैं---

(अ) भक्ति में

(ब) श्रद्धा में

(स) प्रेम में

(द) उपर्युक्त सभी **(स)**

4. समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रकट की जाती है---

(अ) भक्ति

(ब) नीति

(स) श्रद्धा

(द) प्रेम **(स)**

5. श्रद्धा उत्पन्न होती है---

(अ) कर्मों के प्रतिकार रूप में

(ब) कर्मों के अपकार रूप में

(स) कर्मों के शुभ प्रभाव रूप में

(द) क और ग दोनों रूप में **(द)**

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए---

सबसे विराट जनतंत्र जगत का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए त किसे ढंढता है मूरख
मंदिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड़ रहे;
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदण्ड बनने को हैं,
धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

6. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है---

(अ) जनतन्त्र का आगमन

(ब) विराट जनतन्त्र

(स) देश का कृषक

(द) समय की धारा **(अ)**

7. खेतों और खलिहानों में कौन मिलेगा?

(अ) आदमी

(ब) देवता

(स) किसान

(द) खेती **(ब)**

8. 'समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो' से कवि किस समय की बात कर रहा है?

(अ) परिवर्तन का

(ब) बदहाली का

(स) खुशहाली का

(द) जागृति का **(अ)**

9. कवि किसका अभिषेक करवा रहे हैं?

(अ) राजा

(ब) राजकुमार

(स) प्रजा

(द) कोई नहीं **(स)**

10. 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' सिंहासन पर किसका शासन था?

(अ) राजाओं का

(ब) अंग्रेजों का

(स) जमींदारों का

(द) उपर्युक्त सभी **(द)**

11. 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी में किस चीज को लेकर दिल्ली में तहलका मचा था?

(अ) जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर

(ब) एलिजाबेथ के कुत्ते को लेकर

(स) सारे पर्वतों की खोज को लेकर

(द) इनमें से कोई नहीं **(अ)**

12. गंतोक में श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं---

(अ) शान्ति के अवसर पर

(ब) युद्ध के अवसर पर

(स) शोक के अवसर पर

(द) किसी उत्सव के अवसर पर **(स)**